Raga of the Month June 2021

भैरवी रागके अनूठे रंग

भैरवी एक प्राचीन राग है। ऐसा माना जाता है की इस रागका जन्म हिमालयके आदिवासी जाति भिरवा के लोकसंगीतसे हुआ। तथा पंजाबके हीर माहिया लोकसंगीतमेभी भैरवीके स्वरोंका उपयोग होता है। प्रचलित भैरवी रागमे सभी कोमल स्वर प्रयुक्त होते हैं। इस रागके वादी संवादी स्वरोंके बारेमे दो मत प्रचारमें है। प्रथम मतके अनुसार मध्यम वादी और षड़ज संवादी माना जाता है। दूसरे मतके अनुसार धैवत वादी और गंधार संवादी मानते हैं। यह दूसरा स्वरूप ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती होरी, टप्पा जैसे चंचल प्रकृतिके गायनको अनुकूल होता है।

यद्यपि शुद्ध भैरवीमे सिर्फ कोमल स्वरोंका प्रयोग होता है, वर्तमान प्रचारके अनुसार भैरवी में बारह स्वरोंका प्रयोग होने लगा है। शुद्ध ऋषभ- गंधार - धैवत और निषादका ,तथा कभी कभी तीव्र मध्यमका प्रयोग विवादीके नाते गायक वादक कुशलतासे करते हैं जिससे रागकी रंजकता बढ़ती है।

आजके ऑडियोमें राग भैरवीके निराले रंग हम सुनेंगे। विलंबित ख्याल, तराणा, टप्पा और ठुमरी। पहले पंडित रामाश्रेय झा जीने लेक्चर डेमो में प्रस्तुत भैरवीका शुद्ध स्वरूप और विवादी स्वरोंके प्रयोगका विवरण सुनेंगे। बादमे पंडित के जी गिंडे जीने गाया अपने गुरू आचार्य रातंजनकरजी रचित विलंबित ख्याल सुनेंगे। फिर पंडित इन्दूधर निरोडीने गाया हुआ तराणा सुनेंगे। बादमे श्रीमती गिरिजादेवीसे टप्पा और अन्तमे उस्ताद बरकत अली खाँने गायी हुई ठुमरी सुनेंगे।

आभार- "भैरवी" लेख श्री राजन पर्रीकर ; अभिनव गीत मंजरी ; भातखंडे क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २- स्वर संकुल संगीत सभा - पंडित इन्दूधर निरोडी ; "रागांग राग विवेचन "- पंडित यशवंत महाले , श्री अजय गिंडे।

०१ -०६ -२०२१